Paper - IV

MT

2017 1100

MT - HINDI (ENTIRE) (SECOND OR THIRD LANGUAGE) (H) - SEMI PRELIM - I - PAPER - IV

Time : 3 Hours **Model Answer Paper** **Max. Marks : 80**

विभाग 1 - गद्य

उ.1. **(क) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :**

1) **समझकर लिखिए।** **1**

i) (1) बादलों में (2) धुँधलके में

ii) बर्फ के फूलों के धनुष की तरह अर्द्धवृत्ताकार में हिमवती चोटियाँ फैल गई थी। **1**

2) i) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) चलते चलो, चलते चलो।

(2) हिमालय की मुख्य हिमवती - चोटियाँ।

ii) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

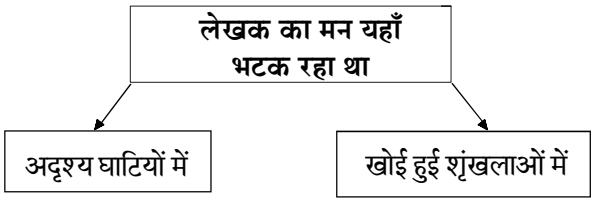

3) i) **निम्नलिखित शब्दों के लिए परिच्छेद में से विलोम शब्द ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(1) सुबह × शाम (2) अपरिचित × परिचित

ii) **निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए।** **1**

(1) बादल - बादलों (2) ऊँचाई - ऊँचाइयों

4) मैं अपने माता-पिता के साथ मनाली गया था। जब हम वहाँ पहुँचे तब शाम हो गई थी। उस वक्त आसमान में अलग-अलग रंगों के बादल छाए हुए थे। सूर्यास्त होनेवाला था। लाल, पीले, सुनहरे रंगों के बादल **2**

आसमान में जमा हो गए थे। उनसे तरह-तरह की आकृतियाँ पल-पल में तैयार हो रही थीं और अपने आप मिटती भी जा रही थीं।मन को लुभाने वाले उन बादलों में मुझे सिंह, हाथी आदि जानवरों की आकृतियाँ नजर आ रही थीं। मानो वे मुझे बुला रही थीं। आज भी मेरे मन में वह दृश्य बसा हुआ है।

उ.1. (ख) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **चौखट पूर्ण कीजिए।** **1**

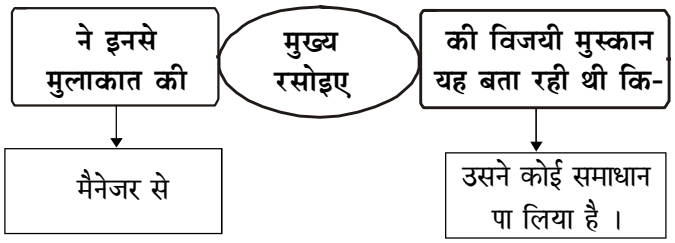

ii) **उपर्युक्त गद्यांश से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हो।** **1**

(1) वर्तन माँजने वाली का क्या नाम था ?

(2) होटल मालिक का संपर्क किससे है ?

2) i) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) होटल मालिक के ।

(2) मैनेजर का ।

ii) **सत्य / असत्य पहचान कर लिखिए।** **1**

(1) असत्य (2) असत्य

3) i) **परिच्छेद में आए अंग्रेजी शब्दों के हिंदी शब्द लिखिए।** **1**

(1) मैनेजर - प्रबंधक (2) मिटिंग - अधिवेशन

ii) **निम्नलिखित शब्दों के विरुद्धार्थी शब्द परिच्छेद से ढूँढ़कर लिखिए।** **1**

(1) चिंतित × निश्चिंत (2) अप्रसन्न × प्रसन्न

4) सभी का अपना महत्त्व होता है। कौन कब किस मुश्किल की घड़ी में हमारी सहायता करेगा, यह जानना सचमुच कठिन है। व्यक्ति चाहे संपन्न हो या दीन, समाज में सभी का अपना स्थान एवं महत्त्व होता है। जहाँ तलवार काम नहीं आ सकती है, वहाँ सुई काम आ जाती है। उसी प्रकार समाज का अभावग्रस्त **2**

वर्ग संपन्न वर्ग की हर प्रकार से सेवा कर उसे प्रसन्न रखने का प्रयास करता है। निम्न दर्जे के सारे काम समाज का अभावग्रस्त वर्ग ही पूर्ण करता है। अत: संपन्न वर्ग का यह कर्तव्य है कि वह उनका खयाल रखें।

उ.1. (ग) परिच्छेद पढ़कर दी गई सूचनाओं के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) उचित विकल्प चुनकर लिखिए । **1**

i) दूरदर्शन के न्यूज चैनल हैं।

ii) अनेक चैनल आ चुके हैं

2) उत्तर लिखिए। **1**

i) विश्व के किसी भी कोने में घटित घटना की कुछ ही क्षणों में सूचना देना

ii) घटित घटना की सूचना देते समय दृश्य भी प्रस्तुत करना।

3) समाज में जो कुछ घटित होता है, उसका लेखा जोखा देने का काम न्यूज चैनल करते हैं। वे हमें सत्य स्थिति से रूबरू कराते हैं। कभी-कभी ऐसा भी होता है कि कोई कोई न्यूज चैनल वास्तविक घटना में अपनी ओर से संशोधन करके दर्शकों को गुमराह करते हैं। यदि ऐसा होता है तो यह बहुत ही बड़ी गलत बात है। न्यूज चैनलों का दायित्व है कि वे जो कुछ समाज में हो रहा है, उस सत्य स्थिति से लोगों को परिचित कराएँ। उन्हें बिना वजह अपनी ओर से नमक मिर्च लगाकर समाचार को प्रसारित करने का कार्य नहीं करना चाहिए। किसी भी खबर को प्रसारित करते समय उन्हें पक्षपात नहीं करना चाहिए। अत: न्यूज चैनलों का दायित्व है कि वे समाजहित को ध्यान में रखते हुए न्यूज प्रसारित करें। **2**

विभाग 2 - पद्य

उ.2. (च) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए : **1**

1) उत्तर लिखिए।

i) **देश की बालकों से माँग**

(1) खून से रंगा गुलाब दो।

(2) शत्रु को जवाब दो।

ii) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

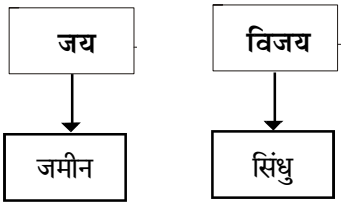

2) i) **सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।** **2**

(1) कवि ने बालकों को थामने के लिए कहा है **देश की मशाल को**।

(2) अब पिशाच के जाल को तोड़ने की जिम्मेदारी **शूरवीर बालकों की है**।

3) i) **पद्यांश में प्रयुक्त विरुद्ध अर्थ के शब्द लिखिए।** **1**

(1) आसमान × जमीन (2) लघु × विशाल

ii) **पद्यांश में आए विरामचिह्नों के नाम लिखिए।** **1**

(1) (!) विस्मयादिबोधक।

(2) (।) पूर्ण विराम।

4) कवि शूरवीर बालकों से कहते हैं कि इस विशाल भारत देश की रक्षा की जिम्मेदारी अब तुम्हारे कंधों पर आ गई है। शत्रुसमूह तुम्हारी हर गतिविधि पर नज़र रख रहा है। देश की सीमाओं पर भी दुश्मन की नजरें टिकी हुई हैं। तुम्हें दुश्मन की हर चाल को नाकाम करते हुए सरहदों की हिफाजत करनी है। जलसेना, थलसेना और वायुसेना इतनी सुदृढ़ हो कि दुश्मन बुरे इरादों से हमारे देश की तरफ देख भी न सके। देश के वीर सिपाहियों अपनी वीरता के बल पर दुश्मनों से अपने देश की आन-बान-शान को सुरक्षित बचाए रखना है। **2**

उ.2. **(छ) पद्यांश पढ़कर सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :-**

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

ये सब गली - गली खुलने लगीं → दरवाजे

ये सब गली - गली खुलने लगीं → खिड़कियाँ

ii) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) बन-ठनकर व सँवरकर मेघ आए। (2) पाहुन।

2) i) **आकृति पूर्ण कीजिए।** **1**

बन - ठनकर सँवरकर कौन आया ? → मेघ

बयार बादलों के आगे - आगे कैसे चली ? → नाचती - गाती

ii) **प्रस्तुत पद्यांश में से दो ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर निम्नलिखित शब्द हों -** **1**

(1) गाँव में कौन आया ?

(2) मेघरूपी मेहमानों का स्वागत करने के लिए क्या खुलने लगीं ?

3) i) **लिंग पहचानकर लिखिए।** **1**

(1) बयार - स्त्रीलिंग (2) पाहुन - पुल्लिंग

ii) **वचन बदलकर लिखिए।** **1**

(1) दरवाजे - दरवाजा (2) खिड़कियाँ - खिड़की

4) प्रकृतिप्रेमी सौंदर्यबोधी कवि सक्सेना जी ने मेघ को खुशियों का प्रतीक माना है। 'ग्रीष्म' की झुलसा देनेवाली धूप से तपी प्यासी धरती को जलधारा से तरोताजा बना देनेवाली यह रूपक रचना है। जब आकाश पर काले बादल (मेघ) सज-धजकर छा जाते हैं, तब वातावरण चारों ओर से सुखद हो उठता है। मेघों की सहचारिणी ठंडी हवा के झोंके मेघ के आगे-आगे बहने लगते हैं। गली-गली में जो दरवाजे-खिड़कियाँ गर्मी के कारण बंद थे, अब वह ठंडी हवा के तेज झोंकों के कारण खुलने लगे हैं। ऐसा लग रहा है कि मेघ रूपी मेहमान का स्वागत सारे गाँव-शहर में हो रहा है। मेघ रूपी मेहमान के आगमन की खुशी से सबका मनमयूर नाच उठा है, उसके स्वागत में सभी लगे हैं। **2**

विभाग - 3 - पूरक पठन

1) i) **कृति पूर्ण कीजिए।** **1**

(1) **आचार्य जी का कार्यस्थल** → रेलवे ऑफिस, झाँसी

(2) **कहा - सुनी का नतीजा** → द्विवेदी जी द्वारा इस्तीफा दे देना ।

ii) **उत्तर लिखिए।** **1**

(1) अंग्रेज अफसर और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी जी की।

(2) अंग्रेज अफसर और उनके मित्रों ने ।

2) स्वाभिमान एक मानवीय गुण है। जिसके पास स्वाभिमान होता है, वह व्यक्ति स्वाभिमानी कहलाता है। स्वाभिमान यानी कि स्वयं पर अभिमान। ऐसा अभिमान, जो सकारात्मक होता है। जिसके पास स्वाभिमान **2**

होता है, वह कभी भी किसी के सामने अपने हाथ नहीं फैलाता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी लाचार या बेबस नहीं होता है। ऐसा व्यक्ति कभी भी किसी से दया की भीख नहीं माँगता है। स्वाभिमान व्यक्ति में अद्‌भुत ऊर्जा का संचार करता है।

विभाग - 4 - व्याकरण

उ.4. सूचना के अनुसार कृतियाँ कीजिए :

1) i) **निम्नलिखित शब्द का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** ½

प्राचीन - गीता **प्राचीन** ग्रंथ है ।

ii) **अधोरेखांकित शब्द का भेद पहचानिए।** ½

चालीस - विशेषण

2) **निम्नलिखित वाक्य शुद्‌ध करके लिखिए।** 1

पलाश में नए पत्ते निकल **आते** है ।

3) i) **निम्नलिखित सहायक क्रिया का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** ½

वाणी की खोज छोड़ दीजिए ।

ii) **सहायक क्रिया छाँटकर लिखिए।** ½

(i) पाया - पाना ।

4) **प्रेरणार्थक क्रिया के रूप लिखिए।** 1

क्रिया	**प्रथम प्रेरणार्थक**	**द्‌वितीय प्रेरणार्थक**
भूलना	भुलाना	भुलवाना

5) i) **अव्यय का वाक्य में प्रयोग कीजिए।** 1

सीता और गीता स्कूल जाती हैं ।

ii) **अव्यय पहचानकर उसका भेद लिखिए।** 1

लिए : संबंधसूचक अव्यय

6) **कालपरिवर्तन कीजिए।** 2

i) बहुत से नेता **आ रहे हैं ।**

ii) समय आ **गया था ।**

7) i) **मुहावरे का अर्थ लिखकर वाक्य में उचित प्रयोग कीजिए :** **1**

हृदय में घुल जाना - कोई बात अंदर तक पहुँच जाना ।

वाक्य : महात्मा की बात मेरे **हृदय में घुल गई ।**

ii) **अधोरेखांकित वाक्यांश के लिए उचित मुहावरे का चयन कर वाक्य फिर से लिखिए ।** **1**

मानसून की वर्षा आरंभ हुई तब कहीं जाकर किसानों की **जान में जान आई ।**

विभाग 5 - रचना

उ.5. 1) **सूचना :- आवश्यकतानुसार परिच्छेद में लेखन अपेक्षित है :** **5**

निम्नलिखित में से किसी एक पत्र का प्रारूप तैयार कीजिए।

सौरभ तिवारी
गीता भवन, राजीव मार्ग,
पूना ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
सरस्वती विद्या मंदिर, शीतलगंज,
पूना ।

विषय : शिक्षक की नौकरी के लिए आवेदन पत्र ।

माननीय महोदय,

पिछले सप्ताह नवभारत टाइम्स में छपे एक विज्ञापन द्वारा मुझे ज्ञात हुआ कि आपके विद्यालय में हिंदी अध्यापक का पद खाली है । मैं उक्त पद के लिए आवेदन करना चाहता हूँ ।

मेरी शैक्षणिक योग्यता इस प्रकार है ।

1) दसवीं परीक्षा	मार्च, 2008	(प्रथम श्रेणी)
2) बारहवीं परीक्षा	मार्च, 2010	(प्रथम श्रेणी)
3) बी.ए. परीक्षा	अगस्त,2013	(द्वितीय श्रेणी)
4) बी.एड.	अगस्त,2014	(द्वितीय श्रेणी)

मैं आपको विश्वास दिलाना चाहता हूँ कि मैं एक योग्य व कुशल शिक्षक बनकर दिखाऊँगा । आप केवल एक बार अवसर देने का कष्ट करें ।

कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।

धन्यवाद !

भवदीय,
सौरभ तिवारी ।

संलग्न प्रतियाँ :

1) दसवीं का प्रमाणपत्र एवं अंकतालिका ।
2) बारहवीं का प्रमाणपत्र एवं अंकतालिका ।
3) बी.ए. का प्रमाणपत्र एवं अंकतालिका ।
4) बी.एड. की डिग्री एवं अंकतालिका ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान प्रधानाचार्य जी,
सरस्वती विद्या मंदिर,
शीतलगंज,
पूना ।

प्रेषक,
सौरभ तिवारी,
गीता भवन,
राजीव मार्ग,
पूना ।

अथवा

रमेश पांडे
इंद्रानगर,
फिरोजपुर ।
दिनांक - 5 मार्च, 2017

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सोनिया औषधि भंडार,
राजीव चौक,
जालंधर ।

विषय : औषधियाँ मँगवाने के लिए प्रार्थना पत्र।

माननीय महोदय,

मैं आपका नियमित ग्राहक हूँ । मुझे जिन औषधियों की आवश्यकता होती है, वे सभी आपके यहाँ आसानी से उपलब्ध हो जाती हैं ।

पिछले तीन-चार सालों से मैं आपके यहाँ से औषधियाँ खरीद रहा हूँ । कुछ दिन पहले ही मैंने आपके औषधि भंडार से कुछ दवाएँ मँगवाई थीं । उन दवाओं के सेवन से मुझे बहुत आराम मिला है । कुछ और देशी दवाइयाँ मँगवाना चाहता हूँ । पाँच सौ रुपए का पोस्टल ऑर्डर पत्र के साथ भेज रहा हूँ ।

दवाओं की सूची इस प्रकार है :

क्रमसंख्या	औषधि का नाम	मात्रा
1	कायम चूर्ण	300 ग्राम
2	च्यवनप्राश	800 ग्राम
3	द्राक्षासव	5 बोतल
4	शहद	1 बोतल

आशा है कि आप तुरंत औषधियाँ भेजने की कृपा करेंगे ।
कष्ट के लिए क्षमाप्रार्थी हूँ ।
धन्यवाद !

भवदीय,
रमेश पांडे ।

टिकट

सेवा में,
श्रीमान व्यवस्थापक जी,
सोनिया औषधि भंडार,
राजीव चौक,
जालंधर ।

प्रेषक,
रमेश पांडे
इंद्रानगर,
फिरोजपुर ।

2) निम्नलिखित मुद्दों के आधार पर लगभग 80 से 100 शब्दों में कहानी लिखकर शीर्षक दीजिए। **5**

जैसे को तैसा

एक घने जंगल में कई प्रकार के पशु-पक्षी आराम से रहते थे । वहीं तालाब के पास एक सारस भी रहता था। उसकी टाँगें और चोंच पतली और बड़ी लंबी थी । वह मछलियों को अपनी चोंच में पकड़ता और खाता था।

एक धूर्त लोमड़ी के यहाँ से सारस को भोजन का निमंत्रण मिला । सारस बड़ा ही प्रसन्न हुआ ।

लोमड़ी के घर भोजन में स्वादिष्ट खीर बनाई गई थी और उसे थाली में परोसा गया था । सारस की चोंच लंबी थी, उसे खीर खाने में बड़ी मुश्किल हुई और वह कुछ न खा सका ।

यह सब देखकर सारस कुछ न बोला और मन ही मन इसका बदला लेने की बात सोचता हुआ घर लौटा । कई दिनों के बाद एक दिन उसे मौका मिल ही गया ।

लोमड़ी को सारस ने भोजन का निमंत्रण दिया। वह बहुत खुश हो गई और सारस के यहाँ पहुँच गई। सारस ने स्वादिष्ट खीर बनाई और सुराही में खाने के लिए परोसी । सुराही की गर्दन का आकार पतला था। अत: लोमड़ी कुछ न खा सकी लोमड़ी को भूखा रहना पड़ा और वह बहुत शर्मिंदा हुई ।

सीख : इस कहानी से हमें यह सीख मिलती है कि जो जैसा कर्म करेगा, उसको वैसा ही फल मिलेगा ।

3) निम्नलिखित गद्यांश पढ़कर पाँच ऐसे प्रश्न तैयार कीजिए जिनके उत्तर एक वाक्य में हो। **5**

i) मानव जीवन के विकास का आधार क्या है ?
ii) व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार क्या है ?
iii) किन लोगों को शिक्षा प्रदान करने की आवश्यकता है ?
iv) साहूकार द्वारा कौन ठग लिया जाता है ?
v) आजादी के पहले शिक्षा के क्षेत्र में लोगों की स्थिति कैसी थी ?

उ.6.	**1) प्रसंग लेखन। (लगभग 60 से 80 शब्दों में)** उस दिन मैं मेरे मित्रों के साथ घुमने गया था । अचानक एक वृद्ध व्यक्ति चक्कर खाकर गिर पड़ा । मैंने उसे नीचे गिरते हुए देखा । मुझसे रहा नहीं गया और मैं तुरंत उस वृद्ध व्यक्ति के पास पहुँचा । मेरे पास सौभाग्यवश पानी की बोतल थी । मैंने न आव देखा न ताव बोतल का पानी उसके मुँह पर छिड़का । इस कारण उस वृद्ध को होश आ गया । तब तक सड़क पर आने - जानेवाले कई लोग वहाँ पर इकट्ठा हो गए । मैंने उस वृद्ध के सिर को अपनी गोदी में रखकर उसे पानी पिलाया । वृद्ध ने पानी के एक दो घूँट पी लिए । सड़क पर इकट्ठा हुए लोगों ने वृद्ध को एक मोटर गाड़ी में बिठाकर अस्पताल ले जाने का निर्णय लिया । गाड़ी में बैठकर अस्पताल जाते समय वृद्ध ने मेरे हाथों को चूमते हुए कहा, ''भगवान तुम्हारा भला करे, बेटा ।'' उस वक्त मुझे जो प्रसन्नता हुई थी । उसका वर्णन करने के लिए मेरे पास पर्याप्त शब्द नहीं है ।	5
	2) स्वमत अभिव्यक्ति : (60 से 80 शब्दों में) पुलिस अधिकारी और राजनेता जनता की सेवा के लिए नियुक्त किए जाते हैं । जनता की सेवा करना उनका कर्तव्य होता है । लेकिन आज के हमारे कई पुलिस अधिकारी और राजनेता भ्रष्टाचार में लिप्त हैं । वे रिश्वत लेकर जनता व देश के साथ गद्दारी कर रहे हैं । यह कितनी गलत बात है । इसी कारण दंगा करनेवाले, गुंडागर्दी करने वाले, चोरी करनेवाले समाज में निडरता से घूम रहे हैं । आज भी हमारे देश में भ्रष्टाचार के खिलाफ कोई भी ठोस कानून नहीं बनाया गया है । यह अत्यंत खेद की बात है। इस प्रकार की घिनौनी हरकत करनेवाले अफसरों व राजनेताओं के खिलाफ जल्द से जल्द कार्यवाही नहीं की गई तो समाज में गुंडों का बोलबाला बढ़ता ही जाएगा । सचमुच, इस भ्रष्टाचार पर हम सभी को मिलकर रोक लगानी चाहिए ताकि एक सुरक्षित भारत का निर्माण हो सके	5
	3) किसी एक विषयपर निबंध लिखिए। (60 से 80 शब्दों में)	5
1)	**<u>यदि समाचार पत्र न होते</u>** समाचार पत्रों का हमारे जीवन में बड़ा महत्त्व है। समाचार पत्र एक ऐसा आईना है कि जिसमें संसार के सभी भाव छिपे होते हैं । उसे पढ़कर हम गहरी जानकारी प्राप्त कर सकते हैं । हम अपनी तुलना संसार के लोगों से कर सकते हैं। समाचार पत्र आज लोगों की जरूरत बन गया है । शहर से लेकर गाँव तक आज लोग समाचार पत्र के दीवाने बन गए हैं । सुबह-सुबह चाय पीते-पीते देश-दुनिया की खबर पढ़ते रहते हैं । गाँव का व्यक्ति समाचार पत्र पढ़ने के लिए कई किलोमीटर की यात्रा तय करके बाजारों तक जाकर देश-दुनिया की खबर लेता है । यह हमें संसार की सारी जानकारी देता है । अगर समाचार पत्र न होते, तो हम सब इन जानकारियों से अनजान होते । आज दुनिया का नजारा बदल रहा है। कहीं लोकतंत्र तो कहीं राजतंत्र, तो कहीं सैनिक शासन आ रहा है । सारी स्थिति की जानकारी समाचार पत्र देते रहते हैं । आज हर देश अपने पड़ोसी देश की गतिविधि जानना चाहता है । वह हमें समाचार पत्र के माध्यम से मिलता है । समाचार पत्र इतना मजबूत हो गया है कि आज कहीं जाने की जरूरत नहीं है। घर बैठे समाचार पत्रों के माध्यम से सब कुछ जान सकते हैं । यह हमारे राजनैतिक ज्ञान को बढ़ाता है । विज्ञापन की दुनिया का यह एक अनोखा भाग है । आज यह गाड़ी, दुकान, मकान आदि की जानकारी देता है । किसे क्या लेना है, क्या बेचना है । वह समाचार पत्र में देखकर उसका लाभ ले सकता है । यह आज लाखों को रोजगार दे रहा है । सुबह-सुबह लोग समाचार पत्रों को बेचकर अपने परिवार के लिए रोटी-रोजी का प्रबंध करते हैं । समाचार पत्र न होते तो लोगों को दुनिया की जानकारी कौन देता ? कोने-कोने की खबर एक-दूसरे तक कौन पहुँचाता ?	

आज लोग लाखों की संख्या में समाचार माध्यमों से जुड़कर रोटी कमा रहे हैं । कुछ समाचार पत्र ऐसे होते हैं जो प्रचार माध्यमों का दुरुपयोग करके समाज में भ्रम, अफवाह फैलाकर नफरत के बीज बो रहे हैं । यह ठीक नहीं है । लोकतंत्र में अपनी बात कहने का हक सबको है। लेकिन जो राष्ट्रविरोधी हो, ऐसे समाचार देकर जनमानस के खिलाफ कार्य करना मानवता के खिलाफ है। यदि समाचार पत्र न होते तो आज लोग एक-दूसरे के करीब न होकर बहुत दूर होते ।

2) **परोपकार**

परोपकार दो शब्दों से मिलकर बना है, पर + उपकार अर्थात दूसरों पर उपकार करना । संसार में अनेक प्रकार के मनुष्य पाए जाते हैं । उनमें से कुछ ऐसे होते हैं जो बिना स्वार्थ भाव को लेकर दूसरों की भलाई के लिए कार्य करते हैं। ऐसे पुरुष परोपकारी कहे जाते हैं और उनके द्वारा दूसरों के हित के लिए किया गया कार्य परोपकार कहा जाता है। जो कार्य अपने हित, सम्मान और यश की भावना को छोड़कर सर्वथा दूसरों के हित की इच्छा के लिए किए जाते हैं, वे ही परोपकार कहे जाते हैं । परोपकारी व्यक्ति का जन्म दया और प्रेम के संयोग से होता है। यह एक ऐसी भावना है जो विशाल हृदय तथा बड़ी सोच वाले मनुष्य के हृदय में रहती है। परोपकार को स्पष्ट करते हुए तुलसीदास ने कहा है -

परहित सरिस धर्म नहिं भाई ।
पर पीड़ा सम नहिं अधमाई ।।

अर्थात इस संसार में दूसरों की भलाई के समान धर्म तथा दूसरों को पीड़ा पहुँचाने के समान कोई पाप नहीं है । वे लोग जो सदा अपने बारे में ही सोचते हैं और जिनके दिल में स्वार्थ भरा रहता है, वे इसका अनुभव नहीं कर सकते हैं । जिस मनुष्य में परोपकार की भावना नहीं रहती, वह गुप्त जी के शब्दों में मनुष्य कहलाने योग्य नहीं हैं -

वही मनुष्य है कि जो मनुष्य के लिए मरे ।
पशु प्रवृत्त है वही जो आप-आप ही चरे ।।

अपना पेट तो पशु भी भर लेते हैं पर जो दूसरों का हित करता है वही मनुष्य कहलाने का अधिकारी है । परोपकार के गुण के कारण मनुष्य को पशुओं से अलग समझा जाता है ।

विद्वान पुरुष अपनी विद्या द्वारा अशिक्षित मनुष्यों को शिक्षित करके परोपकार करते हैं । बलवान पुरुष शारीरिक शक्ति से निर्बलों पर परोपकार करते हैं । वे गरीब और शोषित व्यक्ति पर हो रहे अत्याचार का विरोध करते हैं । धनवान अपने धन के द्वारा गरीबों की सहायता करके परोपकार करते हैं ।

दुखी मनुष्य को धैर्य बँधाना, प्यासे को पानी पिलाना, अंधे को रास्ता दिखाना आदि ऐसे कार्य हैं, जिनको हम परोपकार कहते हैं । परोपकार करने वाले का यश राजमहलों से लेकर झोपड़ियों तक फैल जाता है । उसका सब जगह आदर होता है । परोपकार द्वारा अनेक लोग लाभान्वित होते हैं । वे अपनी कठिनाइयों को परोपकारी की सहायता से दूर कर लेते हैं । जब व्यक्तियों की उन्नति होगी और वे सुखी होंगे तो उनके साथ-साथ समाज की उन्नति भी हो जाएगी । परोपकारी का जीवन दूसरों के लिए आदर्श बन जाता है । आज परोपकार के कारण ही समाज का अस्तित्व कायम है ।

इस प्रकार हमें परोपकार मात्र सेवा की भावना को ही लेकर करना चाहिए । परोपकार करते समय हमें यह अभिमान नहीं होना चाहिए कि हमने व्यक्ति के लिए यह भलाई का कार्य किया । परोपकार हमें नि:स्वार्थ भाव से करना चाहिए ।

❖❖❖❖